अजमेर नगर की स्थापना

डॉ. बलवीर चौधरी

सह आचार्य – इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जोधपुर

अपने आरम्भिक काल से ही अजमेर राजस्थान के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इतिहास लेखक अजमेर का स्थापना काल 145 ईसवी से लेकर विक्रमी 1170 के लगभग बताते हैं जो कि काफी लम्बा समय है। अजमेर की स्थापना का सबसे प्राचीन काल 145 ईसवी, इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया में हण्टर[1] ने बतलाया है और राजस्थान डिस्ट्रिस्ट गजेटियर में वाटसन[2] ने भी इसका समर्थन किया है। परन्तु उपयुक्त मत किसी भी प्रकार से सत्य नहीं माना जा सकता। सभी लेखक इस बात को स्वीकार करते हैं कि अजमेर की स्थापना चौहान राजा अजयराज ने की और इसी आधार पर अजमेर का प्राचीन नाम अजयमेरु था, परन्तु अजयराज का सही काल अभी तक निर्धारित नहीं हो सका है। अजमेर इतिहास के लेखक श्री हरविलास शारदा[3] का मत है कि अजमेर की स्थापना छठी शताब्दी के पूर्व काल में हुई थी। अपने इस मत का समर्थन में उन्होंने चौहान राजाओं की वंशावली का जिक्र किया है जो कि राजशेखर द्वारा लिखत प्रबन्ध कोष पुस्तक में दी गई है। इस वंशावली के अनुसार अजमेर के संस्थापक अज या अजयराज, शाकाम्बरी (सांभर) के चौहान शासकों के क्रम में तीसरे थे तथा इनको अजयराज कह कर भी पुकारा जाता था।

लेकिन दूसरी ओर डा0 दशरथ शर्मा अपनी पुस्तक Early Chouhan Dynasties में यद्यपि अजयराज को तो अजमेर का संस्थापक मानते हैं और उसके दो और नाम अजयदेव तथा अल्हन बतलाते हैं, परन्तु वह उसका काल तथा उस द्वारा अजमेर की स्थापना का काल 1170 विक्रमी के आस पास निशिचित करते हैं।
डा0 शर्मा ने अपना मत 'अपभ्रंश काव्यत्रयीं' के आधार पर प्रस्तुत किया है जिसके लेखक श्री जिनदत्त सूरी अर्णोराज के समकालीन थे। जहाँ तक प्राचीनता का प्रश्न है यह पुस्तक 'प्रबन्ध कोश' से प्राचीन है। इसके आधार पर चौहान राजा अजयराज शाकाम्भरी के राजाओं के क्रम में पच्चीसवें नम्बर पर है। इस प्रकार से एक वंशावली में राजा का क्रम तृतीय तथा दूसरी वंशावली में उसी राजा का क्रम पच्चीसवां होना कई संदेह उत्पन्न करता है तथा उसके ऊपर शोध के लिए इंगित करता है। ऐसा सम्भव हो सकता है कि यह दो अलग अलग राजा हो और इनका इसीलिए अलग–अलग काल–क्रम हो। केवल इसी लिए कि 'प्रबन्ध कोश' 'अपभंश काव्यत्रयी' से बाद का है, उसके मत को पूर्णतया त्यागना तर्कसंग प्रतीत नहीं होता है।

शाकाम्भरी के चौहान राजाओं के क्रम में सभी इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि इसमें प्रथम राजा वासुदेव था तथा 'प्रबन्ध कोश' में इसका काल विक्रमी 688 (551 ईसवी)[2] दिया गया है। साथ ही श्री भाण्डारकर के आधार पर श्री दशरथ शर्मा भी यह स्वीकार करते हैं कि उसका कार्य–काल 627 ईसवी के लगभग था। यह अन्तर उतना नहीं जितना कि अजयराज के कार्य काल के सम्बन्ध में है, अतः इसी आधार पर हम ''प्रबन्ध कोश'' के मत को पूर्णतया त्याग नहीं सकते हैं।
तारीख–ए–फरिश्ता में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनके अनुसार अजमेर 1170 विक्रमी से काफी पहले मौजूद था। अजमेर का सबसे पहले नाम उस समय आता है जबकि 997 ईसवी में[3] सुबुक्तगीन के विरूद्ध लाहौर के शासक की सहायता के लिए अजमेर के राय ने अपनी सेना भेजी थी। लेकिन डा0 दशरथ शर्मा इस वर्णन को इस आधार पर सत्य नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार अन्य मध्ययुगीन इतिहासकार जैसे उत्वी एवं इब्न–उल–अथर आदि के ग्रंथों में इसका कोई जिक्र नहीं है, और इसलिए वह तारीख–ए–फरिश्ता में लिखित अजमेर को शाकाम्बरी मानते हैं,[4] परन्तु जब तक कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिलता कि अजमेर की उस काल में स्थापना भी नहीं हुई थी तब तक हम फरिश्ता के कथन को पूर्ण रूपेण त्याग नहीं सकते।

यद्यपि यह बाद के समय में लिखा गया ग्रन्थ है परन्तु स्वयं डाक्टर दशरथ शर्मा यह स्वीकार करते हैं कि यह ग्रन्थ अन्य मुस्लिम ग्रन्थों से ज्यादा विस्तृत है तथा स्थान–स्थान पर इसकी सूचनाएं प्राचीन हिन्दू ग्रंथ से मिलती है। साथ ही इस पुस्तक में कुछ सामग्री उन ग्रन्थों से ली गई है जो अब अप्राप्य हैं। इस आधार पर जब तक इस तथ्य के विरूद्ध ठोस प्रमाण नहीं मिल जाये हम इसे त्याग नहीं सकते और इस प्रकार से अजमेर का स्थापना काल 997 के पहिले आ जाता है।

श्री हरविलास शारदा ने इस काल के पहिले के भी कुछ उदाहरण अजमेर के होने के दिए हैं। उनके अनुसार अजमेर में दिगम्बर जैन मुनियों के थड़ो एवं छत्रियों में 8वीं एवं 9वीं शताब्दी के शिलालेख मिले हैं। इनमें भट्टाकार रत्न कीर्ति जी के शिष्य हेमराज की कीर्ति समाधि पर अंकित शिलालेख पर तिथि विक्रमी 817 (ईसवी 760) है और इस प्रकार अजमेर कम से कम इस काल में एक सम्पन्न नगर था। लेकिन आज तक किसी भी अन्य इतिहासकार द्वारा इस युग के अजमेर में मिले शिलालेख का जिक्र नहीं करने और इनकी अनुपस्थिति के अभाव में हम इनको पूर्ण रूपेण स्वीकार करने में असमर्थ हैं। वैसे सम्भव यह भी है कि अजमेर की स्थापना के पूर्व भी इस स्थान पर जैन मुनियों की यादगार में इनका निर्माण किया गया हो। इस दिशा में यदि और कोई अन्वेषण कार्य हो और यदि उपयुक्त शिलालेखों की सत्यता स्वीकार कर ली जावे तो फिर यह संभव है कि अजमेर का स्थापना काल 8वीं 9वीं शताब्दी में मिल सके।

संदर्भ

1. दी इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, भाग 1, पृष्ठ संख्या : 92 डबलयू , डबल्यू हण्टर लन्दन 1881
2. सी0 सी0 वाटसन, राजपूतारा डिस्ट्रीक्ट गजेटियर अजमेर–मेरवाड़ा, भाग ए, पृष्ठ संख्या : 92, अजमेर 1904
3. हरविलास शारदा, अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिसक्रिप्टिवख अजमेर 1941
4. डा0 दशरथ शर्मा, Early Chouhan Dynasties 1959, पृष्ठ संख्या : 40
5. तारीख–ए–फरिश्ता : प्रथम भाग, पृष्ठ संख्या : 7 एवं 18
6. डा0 दशरथ शर्मा, Early Chouhan Dynasties , पृष्ठ संख्या : 32
7. वही, पृष्ठ संख्या : 34